

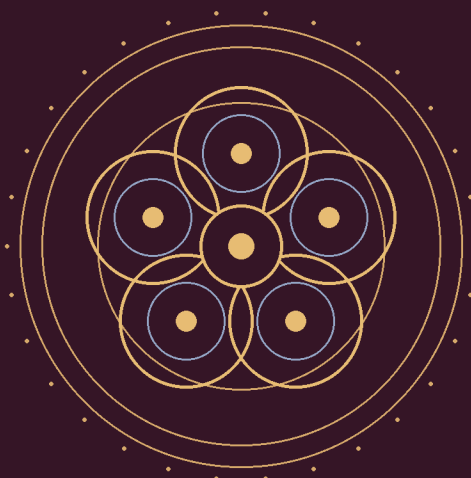
विदेह

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३१

न्यायकुसुमाञ्जलि

पाँच पुष्पगुच्छ आ ईश्वरानुमानक
दार्शनिक, साहित्यिक समीक्षा



मूल संस्कृत : उदयनाचार्य
मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

विस्तृत साहित्यिक आ दार्शनिक समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

ISSN 2229-547X | 2026

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक
सम्पादकीय
खण्ड ३१
न्यायकुसुमाञ्जलि

पाँच पुष्पगुच्छ , प्रमाणमीमांसा , भाषादर्शन आ ईश्वरानुमानक
आलोचना

मूल संस्कृत ग्रन्थकार : उदयनाचार्य

मैथिली अनुवाद आ सम्पादन : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X • २०२६

प्रकाशन-विवरण

शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड : ३१ • समीक्ष्य ग्रन्थ : न्यायकुसुमाञ्जलि

शास्त्रीय मूल लेखक : उदयनाचार्य • संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल पुस्तकक अनुवादक/संस्करणक अधिकार ओकर मूल प्रकाशन-विवरण अनुसार सुरक्षित । एहि आलोचनात्मक अध्ययनक विषय आ उद्धरण मूल द्विभाषिक Word पाण्डुलिपि पर आधारित अछि ।

प्रकाशन संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • ISSN 2229-547X

© प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर, २०२६ ।

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

ई अध्ययन उदयनाचार्यक संस्कृत 'न्यायकुसुमाञ्जलि'क मैथिली अनुवाद आ संलग्न अंग्रेजी पाठक आधारपर प्रस्तुत अछि। एकहि पोथीमे पूर्ववर्ती आधुनिक समीक्षासभ, पाँचू मूल अनुवाद-गुच्छ आ विस्तृत ग्रन्थसूची अछि; मूल अनुवाद आ ओकरा पर लिखल टीका-निबन्ध एहि समीक्षामे एक नहि मानल गेल अछि।

पाँच पुष्पगुच्छमे पहिने कारणता आ कर्मफल, तकर बाद प्रामाण्य आ शब्दक अनित्यता, फेर ईश्वर-विरोधी अनुमान आ प्रमाणसंख्या, चारिमे ज्ञातता-विवाद, आ अन्तमे ईश्वर-साधक हेतुक बहुस्तरीय विमर्श अछि। एकटा गुच्छक स्थापना अगिला गुच्छक आधार बनैत अछि, तँ अन्तिम निष्कर्ष जाँचबाक लेल पहिल चारिक तर्कक परीक्षा अनिवार्य अछि।

समीक्षा एकर काव्यात्मक रूपकक साहित्यिक बल, तर्कक निष्पक्षता, न्याय-मीमांसा-बौद्ध बहसक तात्त्विक अन्तर, मैथिली पारिभाषिक अनुशासन, अंग्रेजी रूपान्तर आ ग्रन्थसूचीक प्रमाणसीमा सबैकें पृथक परखैत अछि। संस्कृत मूलक स्वतंत्र आलोचनात्मक संस्करण मिलान नहि भेल, तँ प्रमाणित पाठान्तरक अनुपस्थिति स्पष्ट राखल गेल अछि।

अनुक्रम

01. ग्रन्थ-परिचय : पाँच पुष्पगुच्छक अन्तर्सम्बन्ध 6
02. मङ्गलवन्दना, विनय आ ज्ञानक उद्देश्य 7
03. पाँच विप्रतिपत्ति आ प्रतिपक्षक न्याय 8
04. पहिल गुच्छ : कर्मफल आ अदृष्टक आवश्यकता 9
05. अकस्मात् उत्पत्ति : चारि अर्थक परीक्षा 10
06. कार्य-कारण : पूर्वता, नियमन आ परिमाण 11
07. सांख्यक कारण-सिद्धान्त पर प्रतिवाद 12
08. सामर्थ्य : गुण कि शर्तसम्बन्ध? 13
09. अभावक कारणता : अनुपस्थिति सेहो प्रभावी? 14
10. वैदिक कर्म आ कर्ताक संस्कार 15
11. चार्वाक प्रतिवादक तार्किक स्वरूप 16
12. सार्वक्षणिकतापर न्यायीय प्रश्न 17
13. दोसरा गुच्छ : प्रामाण्यक बाह्य परीक्षण 18
14. प्रामाण्यक प्रत्यय आ सन्देहक उत्तर 19
15. शब्दक अनित्यता आ अर्थक निरन्तरता 20
16. प्रलय : भौतिक विनाश आ परम्पराक विच्छेद 21
17. नव सृष्टि : आरम्भक अटकल 22
18. तेसर गुच्छ : अग्रहणसँ अभाव? 23
19. खरहाक सींग : निषेधक आश्रय 24
20. अनुमान-विरोधक आत्मविरोध 25
21. सादृश्य, उपमान आ ज्ञान 26
22. उपमानक स्वतन्त्र प्रमाणता 27
23. शब्दप्रमाण : वक्ता, संकेत आ सत्य 28
24. अन्वितार्थ आ वाक्यार्थक विवाद 29

25. अर्थापत्ति : नव प्रमाण कि अनुमानक रूप	30
26. अनुपलब्धि : अभावक ज्ञान	31
27. चारिम गुच्छ : ज्ञानक कारण आ स्वरूप	32
28. ज्ञातता : वस्तुक नव धर्म?	33
29. ज्ञान-वस्तु सम्बन्ध आ अनवस्था	34
30. पाँचम गुच्छ : आठ साधक हेतु	35
31. प्रतितर्कक शर्त आ आत्मविरोध	36
32. परमाणु-गतिपर चेतन नियमनक प्रश्न	37
33. कार्य-सिद्धि आ उत्पादक कारण	38
34. हेतु-पदक अर्थभेद आ पाठनिष्ठता	39
35. विधि आ निषेध : आज्ञा कोन प्रकारक ज्ञान?	40
36. प्रयत्न, इष्टसाधनता आ इच्छा	41
37. शास्त्रीय वचनक कर्तृत्व आ प्रामाण्य	42
38. नामकरण, संख्यासूचकता आ अनुमान	43
39. योगिक प्रत्यक्ष आ प्रमाणक सार्वजनिकता	44
40. पञ्चगुच्छी शैली : पूर्वपक्ष-उत्तरक लय	45
41. मैथिली पारिभाषिक शब्द आ भाषिक रचना	46
42. द्विभाषिक संस्करणमे अंग्रेजी रूपक भूमिका	47
43. ग्रन्थसूची आ स्रोत-प्रमाणक स्तर	48
44. समीक्षात्मक निष्कर्ष : तर्कक बौद्धिक नैतिकता	49
समेकित मूल्याङ्कन	
पारिभाषिक पद-सहचर	
समीक्ष्य पाठक विषय-मानचित्र	
ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र	

1. ग्रन्थ-परिचय : पाँच पुष्पगुच्छक अन्तर्सम्बन्ध

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • फूलक पहिल गुच्छ

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उपर्युक्त पद्यमे द्विअर्थी शब्दसभक प्रयोग द्वारा न्याय-दर्शनक सिद्धान्तसभक तुलना फूलसभसँ कएल गेल अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

न्यायकुसुमाञ्जलिक मैथिली रूपमे पाँच गुच्छ क्रमसँ विकसित होइत अछि। पहिल चारिमे कर्मफल, कारणता, प्रामाण्य, अभाव आ शब्दार्थक विवादसँ तर्कक भूमि बनैत अछि; पाँचम गुच्छमे ईश्वरसिद्धिक विशिष्ट हेतुसभ प्रस्तुत होइत अछि। एना समग्र पोथीकेँ केवल आठ प्रमाणक सूची मानब ओकर दार्शनिक श्रमकेँ घटाएब होयत।

आलोचनात्मक परीक्षण

ग्रन्थक शीर्षकक पुष्परूपक काव्यात्मक अछि, मुदा गुच्छक क्रम बौद्धिक वास्तु-रचना अछि। संरचनात्मक समीक्षामे देखबाक चाही जे आरम्भमे अपनाओल कारणताक मानदण्ड अन्तमे ईश्वरकेँ देल कारणताक प्रतिज्ञापर समान कठोरतासँ लागू होइत अछि कि नहि।

2. मङ्गलवन्दना, विनय आ ज्ञानक उद्देश्य

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • मङ्गलाचरणक विनय-पद्य

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उपर्युक्त पद्यमे द्विअर्थी शब्दसभक प्रयोग द्वारा न्याय-दर्शनक सिद्धान्तसभक तुलना फूलसभसँ कएल गेल अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

आरम्भिक विनय-पद्य शास्त्रार्थक कठोरता सँ पहिने काव्यात्मक आवाहन अछि। रूपक आ समर्पणक स्वर तर्कक प्रतिपादसँ संवाद बनबैत अछि; एही मिश्रणमे पुस्तकक साहित्यिक विशिष्टता निहित अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

स्तुतिपद्यकें प्रमाणक निष्कर्ष नहि मानल जाए। ओ शास्त्रीय वादक आलम्बन-भाव अछि, जकर अलंकारिक महत्त्व अलग आ तर्कगत प्रमाणबोध अलग अछि। एहि विभाजनसँ भारतीय काव्यशास्त्र आ न्यायशास्त्रक समीक्षा एक दोसरा सँ लाभ पवैत अछि।

3. पाँच विप्रतिपत्ति आ प्रतिपक्षक न्याय

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • विचारार्थ प्रतिज्ञासभक सूची आ पहिल प्रतिज्ञाक विस्तृत विवेचन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एहि पाँचमे पहिल वैकल्पिक प्रतिज्ञा ग्राह्य नहि अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ईश्वरक अस्तित्वपर आपत्ति मात्र एकटा नहि; कर्मक प्रेरणा, प्रमाणक सम्भावना, विश्वक कर्तृत्व, देहरहित विश्वसनीयता आ अस्तित्व-विरोधी अनुमान पृथक समस्या अछि। स्रोतक आरम्भमे पाँच मतक सीमांकन विवेचनक अनुशासन बनबैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

समीक्षाक लेल जरूरी अछि जे एक प्रतिपक्ष खण्डित भेलासँ शेष सभ आपत्ति स्वतः समाप्त नहि मानल जाए। धर्ममीमांसक आ चार्वाकक असहमति एकहि प्रकारक नास्तिकतामे बिना प्रमाणक समेटब शास्त्रार्थक उचित पद्धति नहि।

4. पहिल गुच्छ : कर्मफल आ अदृष्टक आवश्यकता

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • विचारार्थ प्रतिज्ञासभक सूची आ पहिल प्रतिज्ञाक विस्तृत विवेचन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एहि पाँचमे पहिल वैकल्पिक प्रतिज्ञा ग्राह्य नहि अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

नियत कर्मफल, कर्ता आ पारलौकिक अवस्थाक सम्बन्धक व्याख्यामे अदृष्ट कारणक प्रस्ताव अछि। ज्ञात कारणसभ अपर्याप्त मानलापर अदृष्टक स्वीकृति दार्शनिक रूपेँ सम्भावित सिद्धान्त होइत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

मुदा “आन कारण भेटल नहि” सँ “विशिष्ट अदृष्ट कारण अवश्य अछि” धरि निष्कर्ष लेल अतिरिक्त प्रमाण आवश्यक अछि। वर्तमान समीक्षा एहि अन्तरकेँ स्पष्ट राखैत अछि; ग्रन्थक आन्तरिक तर्ककेँ पहिने बुझैत अछि, तकर बाद ओकर सामान्यीकरणक बल पूछैत अछि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकेँ तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

5. अकस्मात् उत्पत्ति : चारि अर्थक परीक्षा

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • अकस्मात् वा संयोगवश उत्पत्तिक परिकल्पनाक विवेचन आ खण्डन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“मानि लिअ जे अनित्य कार्य कोनो कारणपर निर्भर भेल बिना अकस्मात् उत्पन्न भऽ जाए, तखन कारण-कार्य सम्बन्ध मानबाक आवश्यकता नहि रहत ॥”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

“अकस्मात्” शब्दमे कारण-अभाव, आत्मोत्पत्ति, असत्सँ उत्पत्ति आ स्वभावगत उत्पत्ति चारि विकल्प अलग देखाओल गेल अछि। एहि विश्लेषणक लाभ ई जे अस्पष्ट पदक आड़िमे तर्क हेरा नहि सकैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

तथापि शब्दार्थक चारि विकल्प निरस्त भेलासँ सभ सम्भावित निर्हेतुक व्याख्या निरस्त भऽ गेल—ई दाबी दार्शनिक रूपेँ अलग परीक्षण चाहैत अछि। सम्यक् आलोचनामे विकल्प-सूची पूर्ण अछि कि नहि, से प्रश्न सेहो उठैत अछि।

6. कार्य-कारण : पूर्वता, नियमन आ परिमाण

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • सामान्य आ विशेष कारण-कार्य
सम्बन्धक व्याख्या आ औचित्य-स्थापन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उपर्युक्त खण्डनसँ ई सम्भावित आपत्ति सेहो निरस्त भऽ जाइत अछि जे
बौद्धक अपोह-सिद्धान्त मानिकऽ कारण-कार्य सम्बन्धक अनिवार्यता
बचाओल जा सकैत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

अनित्य कार्य कोनो निश्चित समयमे प्रकट होइत अछि, तँ हुनकर कारणक
चर्चा समय-संबन्धी अनुशासन माँगैत अछि। पाठ समयविशेषक अस्तित्वकै
कारणताक संकेतक रूपमे पढ़ैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

पूर्ववर्ती घटनामात्र कारण नहि: निर्णायक नियमन आ संगत उपादान चाही।
ज्ञानमीमांसीय रूपेँ अनुमानक प्रतिज्ञा कतेक व्यापक अछि से स्पष्ट कएलापर
ई तर्क अधिक कठोर बनत। ई आलोचना स्रोतक अन्दर सँ उठल विधिसम्बन्धी
प्रश्न अछि।

7. सांख्यक कारण-सिद्धान्त पर प्रतिवाद

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • कार्य-कारण सम्बन्ध पर अद्वैत आ सांख्य मतक निरूपण एवं समीक्षा

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उपर्युक्त बातक बादो मानि लिअ जे संसारक कारण अद्वैतवादीक ब्रह्म जकाँ एकटा अद्वितीय सत्ता अछि, अथवा सांख्यक प्रकृति जकाँ सामान्य स्वरूपवाली कोनो सत्ता अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

प्रकृति, कारण-कार्यक स्वभाव आ परिणामक सांख्यीय व्याख्याकेँ न्यायमत अपन ढंगसँ परखैत अछि। ई विरोध केवल “आस्तिक-नास्तिक”क नहि, जगतक विन्यास आ कारणक गुणक तत्त्वमीमांसीय विवाद अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

प्रतिपक्षक सिद्धान्तकेँ अपन भाषामे अनुवाद करैत काल ओकर प्रमुख प्रतिज्ञा—कार्य कारणमे पूर्वे निहित मानब—क सही स्वरूप स्पष्ट रहबाक चाही। एना नहि भेलापर खण्डन कमजोर रूपर लागू हो सकैत अछि।

8. सामर्थ्य : गुण कि शर्तसम्बन्ध?

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • सामर्थ्य कै स्वतन्त्र सत्ता मानबाक तर्क

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“बहुत पहिने नष्ट भऽ चुकल क्रिया अपन प्रभाव उत्पन्न नहि कऽ सकैत;
नहि तँ ओकर समाप्त होएब अर्थहीन भऽ जाएत ॥”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

कार्य उत्पन्न करबाक सामर्थ्य पदार्थमे अलग गुण अछि अथवा सहायक परिस्थितिसँ बनैत सम्बन्ध? स्रोत अनेक मतक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि।
इएह विश्लेषण तत्त्वमीमांसाकँ व्यवहारक उदाहरणसभसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

स्वभाव-व्याख्याक सामर्थ्य कतेक प्रमाणित अछि से पूछब चाही। किएक तँ
“उत्पन्न भेल कारणे समर्थ अछि” कहब कारणताक व्याख्या नहि, उत्पत्तिक
बाद देल नाम सेहो बनि सकैत अछि।

9. अभावक कारणता : अनुपस्थिति सेहो प्रभावी?

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • अभावक कारणता स्थापित

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“जेना सकारात्मक वस्तु कारण सेहो होइत अछि आ कार्य सेहो, तहिना निषेध अथवा अभाव सेहो कारण आ कार्य दुनू भऽ सकैत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

कारणक चर्चामे कखनो कोनो वस्तुक अनुपस्थिति घटनाक शर्त बनैत अछि। अभावकें निष्क्रिय रिक्तता मानल जाए कि व्याख्यात्मक कारणक अंश, एहि प्रश्नक महत्त्व स्रोतमे स्पष्ट अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

अभावक “कारण” होयब सकारात्मक द्रव्यक समान कारण होयब नहि। उदाहरणमे आन्तरिक कार्यविभाजन स्पष्ट रखबाक होयत, अन्यथा अनुपस्थितिक सूचना आ घटनाक वास्तविक उत्पादक कारण एकभैं होयत।

10. वैदिक कर्म आ कर्ताक संस्कार

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • कर्मकाण्डीय प्रक्रियासँ केवल मानव कर्ताक संस्कार आ प्रभाव होइत अछि—एहि मतक समर्थन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“यज्ञक क्रममे कएल जाएवला अभिषेक, पवित्र जलक छिड़काव आदि केवल कर्म करनिहार व्यक्तिक आत्मा केँ संस्कारित करैत अछि अथवा ओहिमे श्रेष्ठता उत्पन्न करैत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

कर्मक फल सिधे बाह्य वस्तुमे अछि कि कर्ताक संस्कारमे, एहि विवादमे वैदिक अभ्यासक मनोवैज्ञानिक आ दार्शनिक व्याख्या भिड़ैत अछि। सूत्रात्मक सिद्धान्तकेँ अनुवादक बारम्बार प्रश्नोत्तरमे खोलैत छथि।

आलोचनात्मक परीक्षण

कर्मक धार्मिक अर्थ आ व्यवहारगत मनोविज्ञान अलग तहमे राखब आवश्यक अछि। संस्कारक परिमाण वा स्थायित्वक दाबी बिना स्वतंत्र अवलोकनक यथार्थ तथ्य नहि कहल जा सकैत; स्रोतक परम्परागत स्थापना ताहि रूपेँ प्रस्तुत हो।

11. चार्वाक प्रतिवादक तार्किक स्वरूप

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • चार्वाक सिद्धान्तक विवेचन आ खण्डन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एखन धरि जे सिद्ध कएल गेल—आत्मा कर्मक फल भोगनिहार सेहो अछि आ समस्त प्रयत्न/क्रियाक कर्ता सेहो—से तखने मानल जा सकैत अछि जँ अनुभवसभक भोक्ता नित्य आ सर्वव्यापक हो।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

चार्वाकक शंका ई अछि जे कारण आ अनुमानक अनिवार्य सम्बन्धकें प्रत्यक्ष कोना उपलब्ध करैत अछि। पाठ अनुमानक सर्वथा निषेधकें व्यवहारमे कठिन मानैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि प्रतिपक्षक महत्त्व केवल नकारात्मक धार्मिक असहमति नहि; ज्ञानक सत्यापनपर ई एकटा गम्भीर दार्शनिक चुनौती अछि। तर्कक असंगति दिखएबाक लेल विपक्षी मतक स्पष्ट रूप जरूरी अछि, न कि ओकर सामान्य मजाक।

12. सार्वक्षणिकतापर न्यायीय प्रश्न

समीक्ष्य स्थान : फूलक पहिल गुच्छ • सार्वभौम क्षणभंगुरताक पक्षमे
तर्कसभक विवेचन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आब लेखक बौद्धसभ द्वारा सार्वभौम क्षणभंगुरताक समर्थनमे प्रस्तुत कएल
किछु तर्कक विस्तारसँ परीक्षण आ खण्डन करैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

बौद्ध क्षणभङ्गवाद कारणगत परिवर्तनकेँ निरन्तर वस्तुक अपेक्षा क्षणिक
प्रवाहसँ बुझैत अछि। न्यायमत पूछैत अछि जे उत्पादनक नियम आ
पुनरपहचानक व्यवहार एहि प्रवाहमे कोना सम्भव रहत।

आलोचनात्मक परीक्षण

मुदा वैकल्पिक दार्शनिक प्रवाहगत निरन्तरता सेहो स्वीकार करैत अछि। एहि
लेल स्थायी द्रव्यक आवश्यकता सिद्ध करब प्रतिपक्षक तर्क निरस्त करबासँ
अलग काम अछि।

13. दोसरा गुच्छ : प्रामाण्यक बाह्य परीक्षण

समीक्ष्य स्थान : फूलक दोसर गुच्छ • ज्ञानक प्रामाण्यक कारणसभक विवेचन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“पूर्व खण्डक अनुमानसभ द्वारा भाग्य, अदृष्ट वा कर्मफल-जकाँ जगतक अलौकिक कारण सिद्ध भऽ चुकल अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ज्ञानक सत्यता ज्ञानक जन्मसँ स्वतः सिद्ध अछि कि ओकर पछिला परीक्षणसँ, ई विवाद ग्रन्थक दोसर गुच्छक प्रवेशद्वार अछि। न्यायीय विचार ज्ञानक कारणगत विश्वसनीयताक जाँचपर बल दैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

सत्यता उत्पन्न होयब आ सत्यता ज्ञात होयब दुनू अलग प्रश्न अछि। एतय दोसरक उत्तर पहिल पर आरोपित नहि करब—ई समीक्षाक केन्द्रीय कसौटी अछि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकेँ तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

14. प्रामाण्यक प्रत्यय आ सन्देहक उत्तर

समीक्ष्य स्थान : फूलक दोसर गुच्छ • ज्ञानक सत्यता बाह्य रूपेँ ज्ञात होइत अछि—एहि मतक प्रमाण

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“ज्ञानक सत्यता सेहो बाहरी साधनसँ ज्ञात होइत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

बाह्य परिस्थितिक संगति, बाधकज्ञानक अभाव आ सफल प्रवृत्तिक भूमिकाक माध्यमसँ प्रामाण्य जाँचल जाइत अछि। तर्कमे ज्ञानक विषय आ ज्ञानक परिणाम दुनू महत्त्व राखैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

सफल व्यवहार सदा सत्यज्ञानक पर्याप्त प्रमाण नहि; आकस्मिक सफलताक सम्भावना हो सकैत अछि। तकरा ध्यानमे राखि स्रोतक कसौटी कतेक प्रतिरोधक अछि से आलोचनात्मक प्रश्न होइत अछि।

15. शब्दक अनित्यता आ अर्थक निरन्तरता

समीक्ष्य स्थान : फूलक दोसर गुच्छ • शब्द अनित्य अछि—एकर प्रमाणसभ

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आब शास्त्रक लेखक रूपेँ ईश्वरक अस्तित्वक विरुद्ध एहन तर्क राखल जाइत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ध्वनि नष्ट होइत अछि, मुदा अर्थ-व्यवहार अनेक वक्तामे चलैत अछि। एहि स्थायी व्यवहारक आधार शब्दजाति अछि कि परम्परागत संकेत—पाठ भाषादर्शनक गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

श्रवणयोग्य ध्वनि आ पुनरावृत्त भाषिक रूपक भेद स्पष्ट कएलापर अनित्यताक अनुमानक सीमा देखाइत अछि। ई भेद मैथिली अनुवादमे ध्वनि, शब्द आ अर्थक अलग नामसँ बचाओल जा सकैत अछि।

16. प्रलय : भौतिक विनाश आ परम्पराक विच्छेद

समीक्ष्य स्थान : फूलक दोसर गुच्छ • सृष्टि आ प्रलय सम्भव होएबाक औचित्य

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“संसारक सृष्टि आ प्रलयक सिद्धान्त पर उठाओल गेल उपर्युक्त सभ आपत्तिक सहज उत्तर देल जा सकैत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

सृष्टि-प्रलयक तर्कमे जगतक व्यवस्था, परम्परा आ धार्मिक शास्त्रक स्मृतिसँ सम्बन्ध बनाओल गेल अछि। पाठ भौतिक संसारक परिवर्तन आ शास्त्रीय परम्पराक टूटब दूनू प्रलयक भाषामे जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

लोक-संस्थाक ह्राससँ ब्रह्माण्डीय प्रलयक आवश्यक निष्कर्ष नहि निकलैत। प्रमाणक दायरा ठाम-ठाम निर्दिष्ट नहि भेल तँ सामाजिक घटना विश्वोत्पत्तिक सिद्धान्तक अनुपयुक्त उदाहरण बनि सकैत अछि।

17. नव सृष्टि : आरम्भक अटकल

समीक्ष्य स्थान : फूलक दोसर गुच्छ • प्रलयक निष्क्रिय अवस्थासँ नव सृष्टि कोना आरम्भ होइत अछि

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एखन निष्पक्ष पर्यवेक्षक प्रश्न करैत अछि—प्रलयावस्थामे समस्त कर्मक फलदायिनी शक्ति वा अदृष्ट अवरुद्ध भऽ जाइत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

प्रलयक निष्क्रिय अवस्थासँ नव व्यवस्था कोना चलत, एहि प्रश्नमे ग्रन्थ चेतन आरम्भकर्ताक आवश्यकता देखबैत अछि। अनन्त कारणशृंखला अथवा निर्हेतुक प्रारम्भक विकल्पकें तर्क द्वारा परखल गेल अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

नियत नियम आ नियामक व्यक्तिक बीच छुलाँग अछि; नियमक अस्तित्व मात्र वैयक्तिक ईश्वरक सिद्धि नहि। ई ठीक ओ बिन्दु अछि जतय नव्य आलोचना शास्त्रीय अनुमानक साध्य स्पष्ट करबाक आग्रह करैत अछि।

18. तेसर गुच्छ : अग्रहणसँ अभाव?

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • ईश्वरक ज्ञान नहि होएबाक आधार पर नास्तिक तर्कसभक समीक्षा

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“पछिला गुच्छमे निष्कर्ष देल गेल छल जे प्रत्येक सृष्टिचक्रक आरम्भमे वैदिक परम्पराक पुनःप्रवर्तन ईश्वरक माध्यमे सम्भव अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ईश्वर देखाइ नहि पडैत छथि, तँ ईश्वर नहि छथि—एहि प्रकारक निष्कर्षक शर्तक परीक्षा ग्रन्थक तेसर गुच्छमे होइत अछि। वस्तु ग्रहणयोग्य हो, उपयुक्त इन्द्रियस्थिती हो, फेर नहि देखाए तखन अभावक तर्क सुदृढ़ होइत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि सैद्धान्तिक सूक्ष्मता महत्त्वपूर्ण अछि; तथापि ईश्वरक अग्रहणसँ अनस्तित्व नहि सिद्ध होयब अर्थात् ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध होयब नहि। दूनों पक्षक प्रमाणभार अलग अछि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकें तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

19. खरहाक सींग : निषेधक आश्रय

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • अवास्तविक वस्तु निषेधक विषय सेहो नहि भऽ सकैत

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“पहिने कहल गेल जे भ्रममात्र अवास्तविक सत्ता कोनो निषेधक प्रतियोगी नहि भऽ सकैत।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

खरहाक माथापर सींग नहि होयबक कथन कोनो स्वतन्त्र अवास्तविक सींगक द्रव्यगत अस्तित्व नहि माँगैत। निषेधक आश्रय आ प्रतियोगीक योग्यताक भेद पाठक प्रमुख दार्शनिक उपलब्धि अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

प्राकृत भाषामे “खरहाक सींग” सुनिते असम्भव वस्तुक बिम्ब बनैत अछि; तकर व्यवहार आ तार्किक अस्तित्वक अन्तर सुरक्षित राखब अनुवादकक जिम्मेदारी अछि। एहि कारण लोकदृष्टान्त सूक्ष्म तर्कसँ जुड़ैत अछि।

20. अनुमान-विरोधक आत्मविरोध

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • अनुमानक औचित्य-स्थापन आ चार्वाकक आपत्तिसभक उत्तर

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“लेखक आब प्रतिपक्षक मूल संशयक उत्तर दैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

अनुमान पर पूर्ण अविश्वास कहनिहारक अपन तर्क प्रतिज्ञा-हेतु पर निर्भर पड़ि सकैत अछि। ग्रन्थ एहिसँ विपक्षक आन्तरिक असंगति खोजैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

तथापि कोनो विशिष्ट अनुमान अस्वीकार करब आ सभ अनुमान अस्वीकार करब भिन्न बात अछि। समीक्षामे चार्वाक प्रतिपक्षक वास्तविक सीमा ठामठाम परखब चाही।

21. सादृश्य, उपमान आ ज्ञान

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • सादृश्य-प्रमाण ईश्वरक अस्तित्वक विरोधी नहि

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“प्रत्यक्ष आ अनुमान ईश्वरक वास्तविकताक विरोधी नहि—ई देखाओलाक बाद आब उपमान अथवा सादृश्य-ज्ञानक विचार होइत अछि।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

सादृश्यक आधारपर सामान्य पहचान कएब आ सृष्टिकर्ताक अस्तित्व सिद्ध करब एके प्रकारक अनुमान नहि। उपमानक प्रश्नमे शब्द-सीख आ पहिने नहि देखल वस्तुक पहचान महत्वपूर्ण अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

गवयजकाँ दृष्टान्तमे सुनल विवरण, देखल समानता आ निष्कर्ष एक-दोसरसँ कतेक भिन्न अछि से स्पष्ट होइते उपमानक स्वतन्त्रताक विवाद सार्थक होइत अछि।

22. उपमानक स्वतन्त्र प्रमाणता

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • न्यायमतानुसार उपमान के ज्ञानक साधन मानबाक समर्थन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“न्यायमत एकर विपरीत कहैत अछि जे कोनो शब्द आ ओकर वाच्य वस्तुक बीच परम्परागत सम्बन्धक एक विशेष ज्ञान केवल उपमानसँ उत्पन्न होइत अछि; कोनो आन प्रमाण ठीक एहि विशिष्ट ज्ञान केँ उत्पन्न नहि करैत ॥”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

मीमांसा आ न्याय उपमानकेँ अलग मार्गसँ बुझैत छथि। न्यायीय पक्षमे नाम, वर्णन आ नव प्रत्यक्षक समागम विशेष ज्ञान उत्पन्न करैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

ई नव ज्ञान अनुमानसँ पूर्ण स्वतंत्र अछि कि अनुमानक विशिष्ट प्रसंग, तकर उत्तर लेल परिणामी ज्ञानक संरचना देखब जरूरी अछि। “सादृश्य अछि” कथन पर्याप्त नहि; शब्द-वस्तु सम्बन्धक उपज तर्कक केन्द्र अछि।

23. शब्दप्रमाण : वक्ता, संकेत आ सत्य

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • शब्द-प्रमाण पर वैशेषिक मत आ ओकर समीक्षा

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“वैशेषिक आ अन्य दार्शनिक कहैत छथि—शब्द-प्रमाण सेहो ईश्वरक अस्तित्वक विरोधी नहि, कारण पहिनहि देखाओल जा चुकल अछि जे शब्द-प्रमाण ईश्वरक वास्तविकताक विरुद्ध कोनो निषेध उपस्थित नहि करैत।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

वेद आ लौकिक वाक्यक प्रामाणिकताक प्रश्नमे वक्ताक विश्वसनीयता आ अर्थसम्बन्धक व्याख्या चलैत अछि। न्यायीय शब्दप्रमाणकें एकरे फलस्वरूप दार्शनिक आधार भेटैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

वचनक स्रोत विश्वसनीय कहि देबासँ कथनक सभ अर्थ सत्य नहि होइत। प्रसंग, सम्बन्ध आ सम्भावित विरोधी प्रमाणक संग परीक्षणक माँग मूल शास्त्रक आधुनिक अध्ययनमे उपयोगी अछि।

24. अन्वितार्थ आ वाक्यार्थक विवाद

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • प्राभाकर मत—वैदिक वाक्य स्वतन्त्र प्रमाण, लौकिक वाक्य अनुमानाधीन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“प्राभाकर मतावलम्बी वैदिक आ लौकिक—दुनू प्रकारक वाक्यक अर्थ बुझाबय लेल “अन्विताभिधान” अर्थात् जुड़ल अर्थक सिद्धान्त प्रस्तुत करैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

प्राभाकर मीमांसामे शब्द तत्काल सम्बन्धित वाक्यार्थ बुझबैत अछि कि पृथक शब्दार्थ मिलि वाक्यार्थ बनबैत अछि—एहि परम्परागत विवादक प्रभाव दार्शनिक प्रमाण सिद्धान्तपर पड़ैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

वाक्यार्थ केना प्राप्त होइत अछि ताहि प्रश्नक उत्तर भाषिक सन्दर्भ बिना सम्भव नहि। मैथिली पाठक लेल परिभाषा संग छोट वाक्य-दृष्टान्त जोड़ल जाए तँ तर्क सुगम बनत; तथापि शब्दार्थक स्तरसभ बिना कारण मिश्रित नहि करबाक चाही।

25. अर्थापत्ति : नव प्रमाण कि अनुमानक रूप

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • अर्थापत्ति केँ स्वतन्त्र प्रमाण मानबाक आलोचना

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“निश्चयपूर्वक कहल जा सकैत अछि—अर्थापत्ति अनुमानसँ भिन्न स्वतन्त्र प्रमाण नहि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

अनुभवमे देखाएल विसंगतिक समन्वय लेल नयनहेरू व्याख्या खोजब अर्थापत्तिक पहचान अछि। स्रोत ओकर स्वतंत्र प्रमाणता पर प्रश्न उठबैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

जँ पहिने ज्ञात तथ्यक संग नव मान्यता तर्कतः अनिवार्य बुझाईत अछि, तखन ओ अनुमानमे समा सकैत अछि—ई न्यायीय चुनौती। मुदा मीमांसकक भिन्न दाबीकेँ पहिने सही स्वरूपमे दर्ज करब आवश्यक अछि।

26. अनुपलब्धि : अभावक ज्ञान

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • अनुपलब्धि केँ स्वतन्त्र प्रमाण मानबाक आलोचना

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“पहिनहि स्पष्ट कएल जा चुकल अछि जे अनुपलब्धि ईश्वरवादक विरोधी नहि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

अभावक ज्ञान लेल स्वतन्त्र अनुपलब्धि प्रमाण आवश्यक अछि कि इन्द्रियजन्य ज्ञान अथवा अनुमान पर्याप्त, एहि प्रश्नपर आलोचना केन्द्रित अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

वस्तु कखन देखाएब चाही, हुनकर प्रकाश, आश्रय आ दृष्टिपथ कोन अछि—
एहि शर्त बिना अग्रहणक अर्थ अनिश्चित रहत। एतय सूत्रगत कठोरता साधारण उदाहरणसँ अधिक महत्वपूर्ण अछि।

27. चारिम गुच्छ : ज्ञानक कारण आ स्वरूप

समीक्ष्य स्थान : फूलक चारिम गुच्छ • ज्ञानक स्वरूपक विवेचन आ मीमांसा मतक आलोचना

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“एखन ग्रन्थकार आरम्भमे प्रतिपादित चारि मुख्य प्रश्नमध्येसँ चारिम प्रश्न—ईश्वरक ज्ञानक प्रामाण्य—पर विचार करैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ज्ञानक विषय, ज्ञानक उत्पत्ति आ ज्ञानक सत्यता अलग-अलग श्रेणी अछि।

मीमांसक मतक प्रतिवादमे न्यायीय ज्ञानमीमांसा एहि स्तरसभकेँ पृथक रखबाक चेष्टा करैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

पाठकक परीक्षणक कसौटी ई होयत जे विरोधी पक्षक ज्ञानसम्बन्धी गुणसभ नकारलाक बाद न्यायमत अपन ज्ञानप्रक्रियाक सकारात्मक विवरण पर्याप्त दैत अछि कि नहि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकेँ तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

28. ज्ञातता : वस्तुक नव धर्म?

समीक्ष्य स्थान : फूलक चारिम गुच्छ • “ज्ञातता” धर्मक पक्षमे प्रमाण आ ओकर खण्डन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“मीमांसकक सम्भावित तर्क ई अछि—ज्ञान वस्तुमे कोनो उपयोगकारी फल उत्पन्न करैत अछि; नहि तँ अमुक ज्ञान अमुक वस्तुक अछि, आन वस्तुक नहि—ई सम्बन्धक आधार की? वैध ज्ञानक फल ज्ञेय वस्तुमे “ज्ञातता” अथवा “ज्ञात होएबाक धर्म” उत्पन्न करब अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

किछु मतमे “वस्तु ज्ञात भेल” स्थितिक लेल वस्तुमे ज्ञातता नामक धर्म मानल जाइत अछि। न्यायीय प्रश्न अछि जे एहन गुण स्वीकार करब अनावश्यक तत्त्ववृद्धि तँ नहि।

आलोचनात्मक परीक्षण

ज्ञातता वस्तुक स्थिर धर्म अछि कि ज्ञान आ विषयक सम्बन्धक वर्णन—ई दू विकल्प स्पष्ट करिते प्रतिपक्षक तर्क अधिक सूक्ष्म होइत अछि।

29. ज्ञान-वस्तु सम्बन्ध आ अनवस्था

समीक्ष्य स्थान : फूलक चारिम गुच्छ • “ज्ञातता”क पक्षमे दोसर तर्क आ ओकर खण्डन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आन तर्क—हर क्रिया अपन विषयमे कोनो फल उत्पन्न करैत अछि; ज्ञानो मानसिक क्रिया अछि, तँ ओकर विषयमे “ज्ञातता” फल उत्पन्न होएबाक चाही।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ज्ञातता केँ पृथक जाणकारी द्वारा जानब पड़त तँ ज्ञातताक ज्ञातता अन्तहीन प्रश्न बनि सकैत अछि। स्रोत एही तर्कदोषकेँ उभारैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

मुदा सभ सम्बन्धक ज्ञान लेल नवा ज्ञान अनिवार्य मानल जाइत अछि कि नहि—एहि पूर्वधारणाक परीक्षण बिना अनवस्था-दोष घोषित नहि करबाक चाही।

30. पाँचम गुच्छ : आठ साधक हेतु

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण प्रस्तुत आ प्रतिरक्षित

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आब ग्रन्थकार पहिने उठाओल पाँचम संशय—ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण विषयक संशय—दूर करबाक लेल अपन मत विस्तृत रूपेँ रखैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

ईश्वरसिद्धिक प्रसिद्ध हेतु-विन्यास मूल ग्रन्थमे अनेक पारिभाषिक आधारपर विकसित अछि। प्रत्येक हेतु अलग प्रसंगमे काम करैत अछि: कार्य, आयोजन, धृति आदि एकहि प्रमाणक पर्याय नहि।

आलोचनात्मक परीक्षण

“आठ अकाट्य तर्क” सन स्तुतिपरक श्रेणी आलोचनाक निष्कर्ष नहि। प्रत्येक हेतुक पक्ष, साध्य, व्याप्ति, दृष्टान्त आ सम्भावित उपाधिक परीक्षण करिते ओकर वास्तविक शक्ति सामने आबैत अछि।

एहि स्थलपर पूर्वपक्ष, प्रतिपक्षक सम्भावित उत्तर आ लेखकक सकारात्मक प्रतिज्ञाकें तीन अलग प्रमाण-चरण मानल जाए; एकक निषेध दोसरक स्वतः स्थापना नहि अछि।

31. प्रतितर्कक शर्त आ आत्मविरोध

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • सभ नास्तिक शर्ताधारित प्रतितर्क आत्मविरोधी छथि

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“ईश्वरसिद्धि-विरोधी जे सभ शर्ताधारित तर्क प्रस्तुत कएल जाइत अछि, ओ मूलतः दोषपूर्ण अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

प्रतिपक्ष यदि अस्तित्वक शर्त मानि फेर ओकरा निषेध करे तँ व्याघात सम्भव अछि। पाठ शर्ताधारित अनुमानक कमजोरी खोजैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

तथापि विरोधक कारण मात्र व्याकरणिक कथन नहि; कोन प्रतिज्ञा कुन शर्तमे स्वीकारल गेल तकर स्पष्ट लेखा आवश्यक अछि। समीक्षामे एहि अनुशासनकें प्रथम स्थान देल गेल अछि।

32. परमाणु-गतिपर चेतन नियमनक प्रश्न

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • परमाणु-गतिक चेतन कारण आ ईश्वरक धारण-शक्तिक प्रमाण

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“आब दोसर प्रमाणक विस्तार कएल जाइत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

परमाणुक प्रथम गति आ विश्व-व्यवस्था लेल चेतन कारण अपेक्षित मानल गेल अछि। ज्ञात जगतमे प्रयोजनसहित क्रियाक दृष्टान्त ई अनुमानकें सहज बनबैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

जतय प्राकृतिक नियमक व्याख्या सम्भव, ओतय सचेत नियामकक अतिरिक्त आवश्यकता प्रमाणित करब चाही। प्राकृतिक नियमस्वीकृति आ ईश्वरसिद्धि विरोधी होयब अनिवार्य नहि; मुद्दा अनुमानक प्रमाण-भार अछि।

33. कार्य-सिद्धि आ उत्पादक कारण

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • शेष ईश्वरसिद्धि-प्रमाणसभक विस्तार

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“पहिने धारण आ विनाशक आधारपर देल अनुमानसभ केँ “उपाधिदोष” सँ दूषित नहि कहल जा सकैत ।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

निर्मित घटक उदाहरणसँ जगत्क कार्यत्वक अनुमान चलैत अछि । अतएव “उत्पादित” शब्दक लक्षण विश्लेषणक केन्द्रीय बिन्दु होइत अछि ।

आलोचनात्मक परीक्षण

जगत् एकटा एकल निर्मित वस्तु अछि—ई मान्यता स्वतः ज्ञात नहि । युक्तिक सफलताक लेल दृष्टान्त आ महाविषयक प्रासंगिक समानता अलग सिद्ध करबाक चाही ।

34. हेतु-पदक अर्थभेद आ पाठनिष्ठता

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“मूल पद्यमे “कार्यत्व” शब्दक अर्थ एतय “वस्तु” अथवा “वक्ताक अभिप्रेत विषय” अछि—अर्थात् वक्ता जे बात कहबाक आशय रखैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

मूल तर्कमे प्रयुक्त पदसभक वैकल्पिक अर्थ देलासँ अनुमानक स्वरूप बदलि सकैत अछि। संस्कृत पारिभाषिक संकेतसँ मैथिली अनुवादक ठोस पद धरि ई अर्थ-शृंखला देखल जा सकैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि ठाम अंग्रेजी अनुवादक चयन सेहो अर्थ बदलि सकैत अछि। भावी त्रिभाषिक समानान्तर संस्करणमे प्रत्येक हेतु-पदक स्थिर अनुक्रम आवश्यक होयत; वर्तमान समीक्षामे स्वतंत्र संस्कृत पाठावलोकनक अभावक कारण अंतिम पाठनिर्णय नहि देल गेल अछि।

35. विधि आ निषेध : आज्ञा कोन प्रकारक ज्ञान?

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • विधि-निषेधक प्रत्यय सँ ईश्वरसिद्धि

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“शास्त्रीय विधिवाचक आ निषेधवाचक प्रत्यय सर्वोच्च आज्ञादाताक आदेश सूचित करैत अछि, अतः एहन प्रत्ययसभक प्रयोग परम नियन्ता चेतन सत्ताक दिशामे संकेत करैत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

क्रियाक आज्ञा मनुष्यकें प्रवृत्त करैत अछि, मुदा “करू” कहनाइ तथ्यक सूचना दैवाक समान नहि। ग्रन्थ विधि-प्रत्ययक अर्थसँ कर्तृ-इच्छा आ आदेशक सम्बन्ध पर विस्तृत विचार करैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

विधिक वाक्य सत्य-असत्यक कथन अछि कि कर्तव्यक विधान—एहि दार्शनिक भेदक परखा बिना “आज्ञा अछि, तँ आज्ञादाता ईश्वर अछि” स्वतः सिद्ध नहि।

36. प्रयत्न, इष्टसाधनता आ इच्छा

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • क्रियाप्रत्यय प्रयत्नक द्योतक अछि—
लेखकक प्रमाण

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“उपर्युक्त आपत्तिक उत्तरमे लेखक उदाहरण दैत छथि—घट जकाँ निर्मित वस्तु अंकुर जकाँ प्राकृतिक रूपेँ उगनिहार वस्तुसँ एहि कारण भिन्न बुझाइत अछि जे घटक उत्पादन सृजनशील चेतन कर्ताक प्रयत्नसँ सम्बद्ध अछि, जखन कि अंकुरक उद्भव एहन प्रत्यक्ष कर्तृप्रयत्नसँ सम्बद्ध नहि देखाइत ।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

आज्ञाक व्याख्यामे प्रयत्न आ इच्छित फलदायी क्रियाक सम्बन्ध उठैत अछि । पाठ क्रियाप्रत्यय आ कर्ताक नियत प्रवृत्तिक सूक्ष्म भाषिक बिन्दु सामने लबैत अछि ।

आलोचनात्मक परीक्षण

प्रत्ययक व्यवहारधर्मी अर्थ आ वक्ताक मनोदशाक अनुमान अलग चीज अछि । जँ दुनू भिन्नता हटि जाए तँ भाषिक नियमसँ मनोवैज्ञानिक तत्त्वक अनुचित अनुमान निकलि सकैत अछि ।

37. शास्त्रीय वचनक कर्तृत्व आ प्रामाण्य

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • शास्त्रीय वचन ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“वैदिक वचनसभसँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध होइत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

शब्दप्रमाणक आधार शास्त्रीय वचनक व्याख्यामे ईश्वरक उपस्थिति चिन्हित करैत अछि। तर्कमे शास्त्रक अर्थ, प्रामाण्य आ लेखकत्वक सम्बन्ध महत्वपूर्ण अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

वचन विश्वासयोग्य अछि—एहि प्रतिज्ञासँ अति-मानवीय रचयिता एकमेव निष्कर्ष नहि बनैत। वैकल्पिक व्याख्या जँ उपलब्ध, तँ निरसन लेल स्वतंत्र कारण चाही।

38. नामकरण, संख्यासूचकता आ अनुमान

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • संख्यासँ ईश्वरसिद्धि—प्रथमपुरुष प्रत्यय आ वैदिक शाखाक नामकरण

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“संख्याक आधारपर सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध कएल जाइत अछि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

प्रथमपुरुष प्रत्यय, संख्यासूचक रूप आ वैदिक शाखाक नामकरणसँ सम्बन्धित तर्क भाषाक व्याकरणिक अनुशासनकें विश्वव्यवस्था-विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

भाषिक संकेतक इतिहाससँ दैवी स्रोतक निष्कर्ष निकालैत समय शब्दसाक्ष्यक प्रासंगिकता महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि। परम्परागत नामांकनक व्याख्या मात्र दैविक कर्तृत्वक पर्याप्त प्रमाण नहि।

39. योगिक प्रत्यक्ष आ प्रमाणक सार्वजनिकता

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • ईश्वरक प्रत्यक्ष अनुभूतिक सम्भावना
आ योगिक दर्शन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“वेद आ अनुमानसँ ज्ञात परमेश्वरक किछु साधक मनुष्य प्रत्यक्ष मानसिक
अनुभूति सेहो करि सकैत छथि।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

योगिक अनुभवसँ ईश्वरक प्रत्यक्ष सम्भव—एहि विचारमे साधारण
इन्द्रियज्ञानक सीमासँ परे विशेष प्रमाणक दावा प्रस्तुत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

अनुभवक निजी निश्चितता आ अन्य पाठक लेल परीक्षणीय विश्वसनीयता
एके नहि। शास्त्रीय अनुमान आ योगिक प्रत्यक्षकै अलग रास्ताक रूपमे प्रस्तुत
करब समीक्षाक सन्तुलित पद्धति अछि।

40. पञ्चगुच्छी शैली : पूर्वपक्ष-उत्तरक लय

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • पाँचम गुच्छक समापन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“ग्रन्थकार कहैत छथि—शब्दरूपी जल आ अनुमानरूपी तर्कस्रोतद्वारा हम नास्तिकक मनमे जमल भ्रम धोवाक प्रयास कएलहुँ।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

समग्र रचनामे प्रश्न, तर्क, आपत्ति, प्रत्युत्तर आ समय-समयपर विनय-पद्यक आवर्तन अछि। एहि लयसँ दार्शनिक ग्रन्थमे नाटकीयता उत्पन्न होइत अछि—विषयक रहस्य नहि, प्रमाणक संघर्ष ओकर कथानक अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

बाख्तिनीय बहुस्वरता अथवा भारतीय रसक दृष्टिसँ ई संरचनाक तुलनात्मक अध्ययन सम्भव अछि, मुदा एहन तुलना ऐतिहासिक प्रत्यक्ष प्रभावक दावा नहि। काव्यात्मक गुण शास्त्रीय निष्कर्षक अनिवार्य सत्यता नहि सिद्ध करैत।

41. मैथिली पारिभाषिक शब्द आ भाषिक रचना

समीक्ष्य स्थान : फूलक तेसर गुच्छ • शब्द-प्रमाण पर वैशेषिक मत आ ओकर समीक्षा

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“वैशेषिक आ अन्य दार्शनिक कहैत छथि—शब्द-प्रमाण सेहो ईश्वरक अस्तित्वक विरोधी नहि, कारण पहिनहि देखाओल जा चुकल अछि जे शब्द-प्रमाण ईश्वरक वास्तविकताक विरुद्ध कोनो निषेध उपस्थित नहि करैत।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

प्रमाण, अविनाभाव, व्याप्ति, पक्ष, उपाधि, अभाव, ज्ञातता, तात्पर्य आ विधि जकाँ शब्द एकहि पुस्तकमे अनेक गुच्छ पार कए अबैत अछि। अनुवादक कठिन संस्कृत तर्ककें मैथिली गद्यक क्रमिक वाक्यमे खोलैत छथि।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि उपलब्धिक संग पुनरुक्ति आ लम्बा वाक्यक भार सेहो अछि। सरलता लेल सूत्रक तार्किक निषेध वा परिमाण हटाउ नहि; बल्कि छोटे वाक्य आ स्थिर पद-सूची उपयोगी सम्पादकीय उपाय अछि।

42. द्विभाषिक संस्करणमे अंग्रेजी रूपक भूमिका

समीक्ष्य स्थान : अंग्रेजी रूपान्तर • The First Cluster of Flowers

मूल अंग्रेजी पाठक साक्ष्य

"In the verse above, through the use of words with double meanings, the doctrines of Nyāya philosophy are compared with flowers. The meanings of these words apply equally to the context of flowers and to the context of Nyāya doctrine."

दार्शनिक पाठ-विवेचन

मैथिली भागक बाद अंग्रेजीमे पाँचू गुच्छक पाठ उपलब्ध कराएल गेल अछि। ई पाठककेँ विशिष्ट पदक अर्थ-समीक्षा आ कक्षागत तुलनामे सहायता दैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

मैथिली-अंग्रेजी आपसी संगति मूल संस्कृतक आलोचनात्मक पाठक सत्यापन नहि। विशेषतः ईश्वरसिद्धिक हेतु-पद, निषेधक शर्त आ विध्यर्थक मानचित्र लेल स्वतंत्र संस्कृत संस्करणक मिलान शेष शोधकार्य अछि।

43. ग्रन्थसूची आ स्रोत-प्रमाणक स्तर

समीक्ष्य स्थान : ग्रन्थसूची • सत्यापित चयनित ग्रन्थसूची

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

पुस्तकक अन्तमे विस्तृत संस्कृत आधारग्रन्थ, न्याय-वैशेषिक अध्ययन, साहित्यशास्त्र आ अनुवाद-सिद्धान्तक ग्रन्थसूची उपस्थित अछि। एहि सूचीमे किछु प्रकाशन-विवरणक स्वतन्त्र पुष्टि वर्तमान समीक्षा करि नहि सकल।

आलोचनात्मक परीक्षण

एहि कारण अप्रमाणित वर्ष, प्रकाशक वा पाण्डुलिपि-संकेतकेँ पुनः तथ्यक रूपमे नहि दोहराएल गेल। भावी आलोचनात्मक संस्करणमे प्रामाणिक संस्कृत आधारपाठ, भाष्य, पदवार सन्दर्भ आ संशोधन-पञ्जी आवश्यक अछि।

44. समीक्षात्मक निष्कर्ष : तर्कक बौद्धिक नैतिकता

समीक्ष्य स्थान : फूलक पाँचम गुच्छ • पाँचम गुच्छक समापन

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य

“ग्रन्थकार कहैत छथि—शब्दरूपी जल आ अनुमानरूपी तर्कस्रोतद्वारा हम नास्तिकक मनमे जमल भ्रम धोवाक प्रयास कएलहुँ।।”

दार्शनिक पाठ-विवेचन

न्यायकुसुमाञ्जलिक पाँच गुच्छक वास्तविक उपलब्धि केवल ईश्वरक सिद्धि घोषित करब नहि; प्रमाण, भाषा, कारणता आ विरोधी मतक गहन परीक्षण अछि। एहन ग्रन्थक मैथिली पाठ विद्वत् विमर्शमे भाषाक सामर्थ्य स्थापित करैत अछि।

आलोचनात्मक परीक्षण

आलोचनात्मक निष्कर्ष प्रत्येक हेतुकें प्रश्नयोग्य राखैत अछि; न प्रशस्ति भरिसँ पूर्ण स्वीकार, न आधुनिक संशयक नामपर निरर्थक अस्वीकार। मूल अनुवादक जटिल सिद्धान्तक सन्दर्भ, प्रतिपक्षक भिन्न मत आ तर्क-पद्धतिक सूक्ष्मता एहि अध्ययनक मूल्यवान आधार अछि।

समेकित मूल्याङ्कन

पाँचू गुच्छक परस्पर क्रम ईश्वर-साधक अन्तिम तर्कक पूर्वशर्तक सूची अछि। कारणता, शब्द, प्रामाण्य, अनुमान, अभाव आ ज्ञातताक विमर्श स्वयं महत्त्वपूर्ण; हुनका हटाकऽ केवल अन्तिम प्रमाण पढ़ब ग्रन्थक रचना-संगति तोड़ैत अछि।

न्यायीय वाद-पद्धतिक उपलब्धि अछि जे सामान्य धार्मिक प्रतिज्ञाकें खुलेआम अनुमान, उपाधि, व्याप्ति आ प्रतिपक्षक प्रश्नक अधीन कएल गेल अछि। मुदा मूल कृतिक अपील पूरा आधुनिक वैज्ञानिक प्रमाणक समान नहि; एहि अन्तरकें स्पष्ट मानव शास्त्रक अपमान नहि, यथार्थ पाठानुशीलन अछि।

मैथिली अनुवादक बौद्धिक योगदान कठिन पदार्थसँ अधिक पद्धतिक अछि— संशय करब, प्रतिज्ञा अलग करब, विकल्प परखब, फेर निष्कर्ष रखब। अंग्रेजी रूपान्तर पाठकीय पहुँच बढ़बैत अछि, मुदा संस्कृत मूलक स्वतन्त्र समीक्षा पाछाँ बचल रहैत अछि। भविष्यक संस्करण लेल प्रमाणित पाठभेद, स्थिर तर्क-पदकोश आ कारण-हेतु अनुक्रम अनिवार्य सम्पादकीय उपाय होयत।

पारिभाषिक पद-सहचर

निम्न सूची दार्शनिक सन्दर्भ बुझबाक सहायक अर्थ-सङ्केत अछि; एकरा मूल संस्कृत-अंग्रेजीक सत्यापित शब्दशः समांतर पाठ-सारणी नहि मानल जाए।

मैथिली पद	अंग्रेजी अवधारणा
गुच्छ	bouquet / cluster
प्रमाण	means of knowledge
प्रामाण्य	validity
व्याप्ति	pervasion
अनुमान	inference
हेतु	reason
साध्य	probandum
पक्ष	subject of inference
उपाधि	limiting condition
अदृष्ट	unseen potency
अभाव	absence
अर्थापत्ति	postulation
अनुपलब्धि	non-apprehension
उपमान	comparison
शब्दप्रमाण	verbal testimony
अकस्मात्	without cause / suddenly
ज्ञातता	knownness
अन्विताभिधान	related-meaning theory
विधि	injunction
ईश्वर	God / supreme creator

समीक्ष्य पाठक विषय-मानचित्र

क्र.	समीक्ष्य प्रकरण	मूल पाठ-खण्ड
1	ग्रन्थ-परिचय : पाँच पुष्पगुच्छक अन्तर्सम्बन्ध	फूलक पहिल गुच्छ
2	मङ्गलवन्दना, विनय आ ज्ञानक उद्देश्य	फूलक पहिल गुच्छ
3	पाँच विप्रतिपत्ति आ प्रतिपक्षक न्याय	फूलक पहिल गुच्छ
4	पहिल गुच्छ : कर्मफल आ अदृष्टक आवश्यकता	फूलक पहिल गुच्छ
5	अकस्मात् उत्पत्ति : चारि अर्थक परीक्षा	फूलक पहिल गुच्छ
6	कार्य-कारण : पूर्वता, नियमन आ परिमाण	फूलक पहिल गुच्छ
7	सांख्यिक कारण-सिद्धान्त पर प्रतिवाद	फूलक पहिल गुच्छ
8	सामर्थ्य : गुण कि शर्तसम्बन्ध?	फूलक पहिल गुच्छ
9	अभावक कारणता : अनुपस्थिति सेहो प्रभावी?	फूलक पहिल गुच्छ
10	वैदिक कर्म आ कर्ताक संस्कार	फूलक पहिल गुच्छ
11	चार्वाक प्रतिवादक तार्किक स्वरूप	फूलक पहिल गुच्छ
12	सार्वक्षणीकतापर न्यायीय प्रश्न	फूलक पहिल गुच्छ
13	दोसरा गुच्छ :	फूलक दोसर गुच्छ

	प्रामाण्यक बाह्य परीक्षण	
14	प्रामाण्यक प्रत्यय आ सन्देहक उत्तर	फूलक दोसर गुच्छ
15	शब्दक अनित्यता आ अर्थक निरन्तरता	फूलक दोसर गुच्छ
16	प्रलय : भौतिक विनाश आ परम्पराक विच्छेद	फूलक दोसर गुच्छ
17	नव सृष्टि : आरम्भक अटकल	फूलक दोसर गुच्छ
18	तेसर गुच्छ : अग्रहणसँ अभाव?	फूलक तेसर गुच्छ
19	खरहाक सींग : निषेधक आश्रय	फूलक तेसर गुच्छ
20	अनुमान-विरोधक आत्मविरोध	फूलक तेसर गुच्छ
21	सादृश्य, उपमान आ ज्ञान	फूलक तेसर गुच्छ
22	उपमानक स्वतन्त्र प्रमाणता	फूलक तेसर गुच्छ
23	शब्दप्रमाण : वक्ता, संकेत आ सत्य	फूलक तेसर गुच्छ
24	अन्वितार्थ आ वाक्यार्थक विवाद	फूलक तेसर गुच्छ
25	अर्थापत्ति : नव प्रमाण कि अनुमानक रूप	फूलक तेसर गुच्छ
26	अनुपलब्धि : अभावक ज्ञान	फूलक तेसर गुच्छ
27	चारिम गुच्छ : ज्ञानक कारण आ स्वरूप	फूलक चारिम गुच्छ
28	ज्ञातता : वस्तुक नव धर्म?	फूलक चारिम गुच्छ
29	ज्ञान-वस्तु सम्बन्ध आ	फूलक चारिम गुच्छ

	अनवस्था	
30	पाँचम गुच्छ : आठ साधक हेतु	फूलक पाँचम गुच्छ
31	प्रतितर्कक शर्त आ आत्मविरोध	फूलक पाँचम गुच्छ
32	परमाणु-गतिपर चेतन नियमनक प्रश्न	फूलक पाँचम गुच्छ
33	कार्य-सिद्धि आ उत्पादक कारण	फूलक पाँचम गुच्छ
34	हेतु-पदक अर्थभेद आ पाठनिष्ठता	फूलक पाँचम गुच्छ
35	विधि आ निषेध : आज्ञा कोन प्रकारक ज्ञान?	फूलक पाँचम गुच्छ
36	प्रयत्न, इष्टसाधनता आ इच्छा	फूलक पाँचम गुच्छ
37	शास्त्रीय वचनक कर्तृत्व आ प्रामाण्य	फूलक पाँचम गुच्छ
38	नामकरण, संख्यासूचकता आ अनुमान	फूलक पाँचम गुच्छ
39	योगिक प्रत्यक्ष आ प्रमाणक सार्वजनिकता	फूलक पाँचम गुच्छ
40	पञ्चगुच्छी शैली : पूर्वपक्ष-उत्तरक लय	फूलक पाँचम गुच्छ
41	मैथिली पारिभाषिक शब्द आ भाषिक रचना	फूलक तेसर गुच्छ
42	द्विभाषिक संस्करणमे अंग्रेजी रूपक भूमिका	अंग्रेजी रूपान्तर
43	ग्रन्थसूची आ स्रोत- प्रमाणक स्तर	ग्रन्थसूची
44	समीक्षात्मक निष्कर्ष : तर्कक बौद्धिक नैतिकता	फूलक पाँचम गुच्छ

ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र

उदयनाचार्य । न्यायकुसुमाञ्जलि । संस्कृत मूल; गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद आ संलग्न अंग्रेजी पाठ । विदेहक उपलब्ध द्विभाषिक पुस्तक-पाण्डुलिपि, २०२६ ।

उदयनाचार्य । आत्मतत्त्वविवेक । शास्त्रीय संस्कृत दर्शनग्रन्थ ।

उदयनाचार्य । न्यायकुसुमाञ्जलि । शास्त्रीय संस्कृत दर्शनग्रन्थ ।

गङ्गेश उपाध्याय । तत्त्वचिन्तामणि । न्याय-ज्ञानमीमांसा विषयक मूल संस्कृत ग्रन्थ ।

गौतम । न्यायसूत्र । न्यायपरम्पराक आधार-ग्रन्थ ।

वाचस्पति मिश्र । भामती । शंकराचार्यक ब्रह्मसूत्रभाष्यपर टीका ।

ग्रन्थसूचीमे अवलोकित संस्करणबाहेक प्रकाशन-वर्ष अथवा प्रकाशकक अप्रमाणित विवरण जोड़ल नहि गेल अछि ।

न्यायकुसुमाञ्जलि

खण्ड ३१ — मूल पाठक समीक्षा

न्यायकुसुमाञ्जलिक पाँच पुष्पगुच्छक
मूल तर्क आ मैथिली-अंग्रेजी पाठक अध्ययन।
कारणता, कर्मफल, प्रामाण्य, शब्दार्थ,
ज्ञातता आ ईश्वरसिद्धिक प्रमाण-परीक्षा।
पूर्वपक्ष, प्रतिपक्ष आ अनुमानक सीमा
पर न्यायीय पद्धतिसँ आलोचनात्मक विवेचन।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

अनुवादक : गजेन्द्र ठाकुर



VIDEHA.CO.IN



VIDEHA GITHUB

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

ISSN 2229-547X | 2026

www.videha.co.in